"हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की कामिल पैरवी ज़रूरी"

यानी

हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के बतलाए हुए तरीक़ों पर ज़िन्दगी भर पूरी तरह से अमल करना ज़रूरी

जुमअतुल विदा को की गई हज़रत मौलाना सैय्यद अबुल हसन अली नदवी (अली मियां साहब) मददज़िललहुलआली की तक़रीर जो २४ रमज़ानुल मुबारक १४१३ हिजरी को हज़रत सैय्यद शाह अलमुल्लाह साहब की मस्जिद में की गई। (तकिया कलां, रायबरेली)

www.abulhasanalinadwi.org

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ख़ुतबए मसनूना के बाद !

मेरे अज़ीज़ भाइयों दोस्तों और बुज़ुर्गों और हम मज़हब मुसलमान भाइयों ! सबसे पहले हम आपको इस बात की मुबारक बाद देते हैं कि अल्लाह तबारक तआला ने रमज़ानुल मुबारक का महीना नसीब फ़रमाया और हम को और आपको ज़िन्दा रखा कि हमारी ज़िन्दगी में एक बार फिर रमज़ानुल मुबारक का महीना आ गया। आप याद कीजिए उन लोगों को जो रमज़ान से पहले चले गए। अल्लाह तबारक तआला का बहुत बड़ा इनआम हुआ और इसके बाद फिर यह कि जुमअतुल विदा है। इस महीने का बज़ाहिर आख़री जुमा है जो अल्लाह नसीब फ़रमा रहा है और इसके बाद इन्शाअल्लाह ईद का मुबारक दिन भी आएगा। हम आप अल्लाह का शुक्र अदा करेंगे, रोज़े की तौफ़ीक़ पर और अल्लाह की निअमतों पर, इस वक़्त ऐसा मौक़ा है, दूर-दूर से भाई आए हैं मुख़्तलिफ़ ज़हीन के, मुख़्तलिफ़ हालात के, मुख़्तलिफ़ तबीअतों के, मुख़्तलिफ़ माहौल के और मुख़्तलिफ़ मजबूरियों के और दुश्वारियों के। इस वक़्त ऐसी बात कहना ज़रूरी मालूम होता है कि जो तमाम उम्र काम आए, और हर जगह काम आए। लिहाज़ा हर एक के काम आए और अल्लाह तआला की तौफ़ीक़ पर मुनहसिर है और यह बात इसलिए मुमकिन है कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने कोई बात उठा नहीं रखी (हमको बताई व छुपाई नहीं) और इन्सान की निजात के लिए, अल्लाह की ख़ूशनूदी हासिल करने के लिए, अल्लाह की मर्ज़ी के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने के लिए और इस दुनिया में भी अल्लाह

www.abulhasanalinadwi.org

के फ़ज़्ल का और उसके इनआम का मुसतहिक़ बनने के लिए, क़यामत में, मरने के बाद आँखे बन्द होने के बाद अल्लाह की निअमतों को पाने के लिए, जन्नत में जाने के लिए हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने कोई बात उठा नहीं रखी, आप का कलाम आपके इरशादात ऐसे हैं कि इनमें एक-एक इरशाद ऐसा है कि अगर अल्लाह हमें तौफ़ीक़ दे और हमारी क़िसमत अच्छी हो और अल्लाह को मंज़ूर हो तो सारी उम्र के लिए काफ़ी है और सारे हालात के लिए काफ़ी है। हमसे अगर कहा जाए, कोई हम से फ़रमाईश करे कि कोई बात ऐसी कह दीजिए कि हम इसको पकड़ लें, हम इसको दिल पर लिख लें, पल्लू में बांध लें, और फिर हम इसकी रोशनी में इसके साए में, पूरी ज़िन्दगी गुज़ार दें और हर बात के लिए हमें बार-बार पूछने की ज़रूरत न पड़े। मसले पूछने की ज़रूरत पड़ती है, रास्ता पूछने की ज़रूरत पड़ती है, और बहुत सी चीज़ें। लेकिन अल्लाह की रज़ा हासिल करने और जैसी ज़िन्दगी वह चाहता है और उसके रसूल हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम जिस तरह की ज़िन्दगी गुज़ारने का तरीक़ा बतलाने के लिए दुनिया में तशरीफ़ लाए थे। आपने उसके बताने में कोई कमी नहीं फ़रमाई।

या अय्युहर रसुलू बल्लिग़ मा उनज़ेला इलैक, फ़इल्लम तफ़अल मिम्मा बललग़ता रिसालतह०

तर्जुमा- ऐ अल्लाह के नबी जो कुछ आप पर उतारा गया है सब पहुंचा दीजिए भगर आपने ऐसा नहीं किया तो रिसालत व नबुव्वत का हक़ अदा नहीं हुआ।

तो आपने कोई कसर उठा नहीं रखी। आपके इरशादात तो बहुत हैं और सहाबाकिराम रिज़वानुल्लाह अलैहिम अजमईन से बढ़कर कोई

क़दरदान नहीं हो सकता, आशिक़े रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम नहीं हो सकता, शमा के परवाने क्या चीज़ हैं? वह शमा रिसालत के परवानों से बढ़कर परवाने थे। इनकी सेरी नहीं होती थी **दीन की बातों से,** लेकिन किसी सहाबी ने पूछा या रसूलुल्लाह आप कोई ऐसी बात बता दीजिए वह पकड़ लूं। दामन में बांधलू, बातें बहुत हो गई हैं, अहकाम हैं मसाइल हैं और पूरा अल्लाह का कलाम है, क़ुरआन मजीद है। मुझे लेकिन कोई ऐसी बात बता दीजिए जिसे हम अपना दस्तूरुलअमल बना लेवें और हमारे लिए काफ़ी हो जावे। आपने बताया, आपने फ़रमाया, अब इस वक्त मैं आपके सामने एक हदीस शरीफ़ पढ़ूंगा, आप इसको अपने साथ ले गए, यहां छोड़ नहीं गए, यह पुख्ता इरादा करके गए कि इस हदीस पर अमल करना है तो यह काफ़ी है। और वह हदीस ऐसी है जो चौंका देने वाली है, और जगा देने वाली है, आदमी को, मुसलमान को, अपनी ज़िम्मेदारी, नज़ाकत जिसमें है, इसके अमल न करने में जो ख़तरा है और अमल करने में जो कामयाबी है वह पूरी की पूरी बात इसमें आ गई है, ग़ौर से सुनिए—

ला युमिनु अहदोकुम् हत्ता यकूना हुवाहु तबअन लिमा जैएतो बेही०

तर्जुमा—तुम में से कोई आदमी (शख्स) साहबे ईमान (ईमानवाला) नहीं हो सकता जब तक के इसकी ख्वाहीशात इसके ताबे न हो जाए इसके पैरू न हो जाए **जिसको मैं लेकर आया हूँ।** (तुम में से कोई आदमी ईमान वाला नहीं हो सकता, जब तक कि वह अपनी ज़िन्दगी उस तरीक़े पर न गुज़ारे जिसको मैं लेकर आया हूं।

हज़रत मोहम्मद सल्लाल्लाहो अलैहे व सल्लम से बढ़कर तवाज़े दुनिया में किसी के अंदर हो ही नहीं सकती लेकिन इस मौक़े पर आपने जो अलफ़ाज़ इस्तेमाल किए हैं इससे मालूम होता है कि आपने कितनी

www.abulhasanalinadwi.org

[illegible] और आपने इस वक़्त मुक़ामे रिसालत का ख्याल किया, [illegible] का और बहुत सी चीज़े जो मुश्तरिक हैं इसमें से किसी का ख्याल नहीं किया, तवज्जह नही की बल्कि अपने मनसब और मुक़ाम को [illegible] को सामने रखा, और आपने फ़रमाया और ऐसे [illegible] के साथ कोई बात कही जाती है, और ललकार कर कही जाती है [illegible] के सोते हुए को जगा कर के, और जागते हुए को [illegible] कर के इसको मुतवज्जह कर के बात कही जाती है। तुम में से कोई [illegible] ईमान नहीं हो सकता है जब तक कि इसकी खुवाहिश [illegible] इसकी खुवाहिशात इसके मुताबिक़ न हो जाए [illegible] (क़ब्ज़े में) न हो जाए जिसको लेकर मैं आया [illegible] और इसमें आपने बिलकुल [illegible] वाहिद मुतकल्लिम का सीग़ा इस्तेमाल [illegible] जो अरबी जानते हैं वह इसको समझते हैं कि जिसको [illegible] आया हूं इसके ताबे (अन्डर) न हो जाए। [illegible] है इसमें खुवाहिशात, लज़्ज़ात, [illegible] शौक़ व लालच सब आ जाते हैं। [illegible] अन्दर का भी और बाहर का भी। [illegible] है? अन्दर की ख़ुवाहिशात, बाहर का क्या? [illegible] बाहर का माहौल, इसके तक़ाज़े और लोगों को [illegible] चीज का डर है कि हमने यह नहीं किया तो यह नुकसान हो जाएगा, या हमारी तरफ़ उंगलियां उठ जाएगी, और हमें लोग बदनाम करेंगे, हमें ज़िल्लत और हिक़ारत की निगाह से देखेंगे हमारा इतना ज़बरदस्त माली नुकसान हो जावेगा कि हम मुंह दिखाने के क़ाबिल नहीं रहेंगे, हम सर उठा कर चल

नहीं सकेंगे। हम घर में जाएंगे, हमें इसका भी डर है कि घर में उंगलियां उठें, और घर वाले शिकायत करें कि हमारे खानदान में यह होता आया है, हमारी बिरादरी में यह होता आया है, हमारे माहौल में यह होता आया है, यह कैसी शादी कर दी लड़की की, यह कैसे निकाह लड़के का कर दिया, और इसी तरह रुख़्सत कर दिया, वह हमारी धूमधाम कहां गई, इसके लिए लवाज़मात थे, और इसमें शान शौकत के जो मुज़ाहरे थे और हैसियत उरफ़ी जो हमारी है, और हमारी जो सोशियल पोज़ीशन है और हमें जिस नज़र से देखा जाता है और हमारी जो इज़्ज़त है मोहल्ले में, ख़ानदान में, इस सब के मुताबिक़ आपने कुछ नहीं किया सब पर खाक पड़ गई। और सब पर धूल पड़ गई और उंगलियां उठने लगीं, देखो यह जा रहे हैं इनके पास पैसा नहीं रहा, इन्होंने ऐसी शादी की, अरबी पढ़वा रहे हैं, कोई अच्छी नौकरी नहीं मिली, यह बच्चा क्या कमाएगा, क्या खाएगा, क्या पहनेगा और क्या खिलाएगा? और फ़लां व्यापारी ने सूद छोड़ दिया, नहीं लिया, और इन्होंने बहिन को हिस्सा दे दिया, ऐसी पचास बातें हैं

तुम में से कोई आदमी इस वक़्त तक मोमिन नहीं हो सकता जब तक इसकी दिल की चाहत और जो आदतें रसमें हैं। मेयार हैं, और जिसकी जो हैसियत है, इसके लिए यह मुकर्रर हो जाता है, क़ानून बन जाता है, कि अपने लड़के की शादी करेगा तो इस मैयार (तरह) से दावत करेगा तो इस मेअयार से, कपड़े ऐसे पहनेगा, बाहर निकलेगा तो ऐसी सवारी होगी, ऐसा लिबास होगा और फ़लां से मिलेगा, फ़लां से नहीं मिलेगा, मिलने और न मिलने के लिए भी कोई फ़ैसलाकुन बात नहीं है कि इसका

हक़ है इसका अज़ीज़ होता है, रिश्ता है, इस पर अल्लाह के आइद करदा हुक़ूक़ आइद होते हैं कि नहीं, किससे मिलने में इज़्ज़त है, किससे मिलने में बेइज़्ज़ती है, किससे मिलने में फ़ायदा है, किससे मिलने में नहीं, कहां बैठने में अच्छाई है, कि लोग देखें और इशारा करें कि देखो कैसे मअज़्ज़िज़ आदमी के सामने बैठा है और कहां बैठना ऐब की बात समझी जाएगी, यह भी मौलवियों में हो गया, कहां बैठा है, मस्जिद जाने लगा है, इसको भी किसी की हवा लग गई, यह सारे मेअयार हैं और यह सारी शर्तें हैं। हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम फ़रमाते हैं। यह सब मेरी लाई हुई तालीम, जो शरीअत में लेकर आया हूं। यह हलाल यह हराम, यह जाइज़ यह ना जाइज़, यह मकरूह यह मुबाह। यह दुनियादारी यह दीनदारी, यह ख़ुदा की मरज़ी यह इसकी नाफ़रमानी। यह शरीअत के मुवाफ़िक़ यह शरीअत के ख़िलाफ़ जो शख़्स जब तक यह तय न करेगा अच्छी बात वह है जो अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने कही। चाहे इससे यहां इज़्ज़त मिलती हो चाहे बेइज़्ज़ती होती हो। चाहे घर लुट जाता हो, खाने को कुछ न रहता हो, यह बातें कुछ नहीं, फ़ैसला कुन बात यह है यह शरीअत के मुताबिक़ यह शरीअत के ख़िलाफ़ हम इल्म रखने वाले से पूछेंगे इसके बारे में शरीअत का क्या हुक्म है, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के ज़माने में तक़रीबात (शादी बियाह) कैसे होती थी।

एक बड़े सहाबी जो अशरह मुबशशरह में है यानि वह १० ख़ुशक़िस्मत सहाबी, जिनको हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने उनकी ज़िन्दगी में ही नाम ले लेकर कह दिया कि यह जन्नती है। हुज़ूर

सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम को बता दिया गया कि यह जन्नत में जाएंगे। इन्हीं में एक हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ हैं, और फिर मुहाजिर थे, मक्का मुकर्रमा से हिजरत कर के आए थे, क़ुरैशी थे आप के ही क़बीले के थे, और मुमकिन है ऊपर जाकर कई-कई रिश्ते निकलते हों। आपस में बिरादरियों में शादियां होती हैं और बड़ी बात यह है कि थोड़े से आदमी मक्का मुकर्रमा से हिजरत कर के आए थे, और जब कोई किसी मुल्क से किसी मुल्क जाते हैं तो आमतौर से क़रीब-क़रीब रहता है ज़रा आसानी होती है एक दूसरे की ज़रूरतों को समझता है। और एक दूसरे के साथ हमदर्दी करता है मेअयार को समझता है, चुनांचे यहां के लोग जो ताजिर थे, सब करांची में जाकर ठहरे कि यह कारोबारी शहर है, तिजारती मरकज़ है तो यह लोग जो पंजाबी कहलाते थे जिनका कारोबार बम्बई में देहली में हर जगह तिजारत का था, वह लाहौर में रहे या करांची में रहे, अक्सर लोग करांची में मुक़ीम हो गए। इसलिए कि एक दूसरे की ज़ुबान समझते हैं। रिश्तेदारियां भी होती हैं। इससे मालूम होता है कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम के बहुत क़रीब रहे होंगे और मदीना तय्यबा उस वक़्त कोई बहुत बड़ा शहर भी नहीं था। तअज्जुब है। हदीस की रिवायत है मानना पड़ता है, कि हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ एक मर्तबा हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम की ख़िदमत में हाज़िर हुए, लिबास कुछ ज्यादा अच्छा है ख़ुशबू आ रही है, इतर लगा हुआ है, हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम ने फ़रमाया अब्दुर्रहमान ख़ैरियत तो है, क्या बात है? बेतकल्लुफ़ी में आपने पूछ लिया, उन्होंने अर्ज़ किया या रसूलुल्लाह मैंने शादी की है। इसलिए यह इतर वग़ैरह है। हमने बड़े मजमओं में कहा उल्मा के सामने कहा कि आज तक कोई मुहद्दिस यह साबित नहीं कर सका है कि आपने एक हर्फ़

www.abulhasanalinadwi.org

भी ज़ुबान से फ़रमाया हो। यहां रायबरेली में कोई तक़रीब हो किसी बहुत जानने वालों की, कि ख़बर तो की होती, कम अज़ कम चाहे हम न आ सकते, हम दुआ कर देते और फिर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम से बढ़ कर दुआ किसकी हो सकती है। कुछ नहीं कुछ नहीं, दुआ के लिए तो ख़बर करते कि या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम में शादी करने जा रहा हूं। दुआ फ़रमाइये, अल्लाह मुबारक फ़रमाए और आपस में जानते थे। **कुछ नहीं, ख़बर भी नहीं की।** यह इनकी अक्ल थी, अक्ले ईमानी थी कि हम जितनी देर के लिए दावत दें इतनी देर में मालूम नहीं वहीं का कितना हिस्सा नाज़िल हो जाए और क्या-क्या मालूम, कोई रोज़नामचा होता कि कल कौनसा हिस्सा नाज़िल हुआ आज कौन सा हिस्सा नाज़िल हुआ।

हम यक़ीन के साथ कहते हैं जो वक्त हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ के यहां शादी का था, उस वक्त भी क़ुरआन मजीद की कोई सूरत या इसका कोई हिस्सा नाज़िल हो रहा था वह जगह इसके लिए मुनासिब नहीं थी इसके लिए आपकी अपनी जगह थी आपने एक हर्फ़ शिकायत का नहीं कहा उन्होंने एक हर्फ़ माज़ेरत का नहीं कहा, कि या रसूलुल्लाह आपको ज़हमत होगी, ये मजबूरी थी वह दुशवारी थी, कुछ नहीं कहा, न उन्होंने माज़ेरत की ज़रूरत समझी ना आपके दिल में शिकायत पैदा हुई इसी तरह शादियां होती थी। इसी तरीक़े से और बातें हैं। पांच वक्त की नमाज़ है सबसे पहले अक़ीदे की बात है कि अल्लाह के सिवाए पूरी कायनात (दुनिया) मे कोई नफ़ा व ज़रर (फायदे या नुक़सान) का मालिक नही है, दुनिया से जो चला गया न अब वह नफ़ा पहुंचा सकता है न नुक़सान। कितना बड़ा बुज़ुर्ग क़ुतुब अबदाल, अब कुछ काम नहीं आ सकता। इनकी दुआएं इनके मलफ़ूज़ात यह सब काम आएंगे। लेकिन

हम इनके मज़ार पर जाकर मांगे कि हमें औलाद दे दीजिए, हमको अच्छा कर दीजिए, या हमको रोज़ी मिल जाए या हमारे ओहदे में तरक्क़ी हो जाए, **यह काम वहां करने का नहीं, यह मस्जिद में करने का है,** अल्लाह से दुआ कीजिए और गिड़गिड़ाइए और इसमें भी यह आता है **ला युमुनि अहदकुम इल्ला यकूनो हुवा तबअन लिमा जैतोबेही** एक अक़ीदा है रच बस गया है मज़ारों पर चादरें चढ़ रही हैं, चिराग़ जलाए जा रहे हैं, मिन्नतें मानी जा रही हैं, जश्न हो रहा है, एक मेला लगा हुआ है तो हम इसको क्या कहे, फ़रमाया दुनिया में जो कुछ होता है जितनी धूमधाम शान शौकत और आमतौर से होती है। मैं जिस चीज़ को लेकर के आया हूं इसके ताबे होना चाहिए आप किस अक़ीदे को लेकर के आए हैं। **अलालहुल ख़लक़ो वल अमर।** याद रखो अल्लाह तआला का काम है, पैदा करना इसी का काम है इंतज़ाम करना, इसी का काम है **इस दुनिया को चलाना** इस दुनिया के चलाने में कोई शरीक नहीं है कि कोई दूसरा भी मदद कर रहा है। या किसी को दूसरा महेकमा दे दिया गया। मसलन औलाद देने का महेकमा किसी को, रोज़ी देने का किसी को, क़िस्मत अच्छी करने का किसी को। नहीं। पूरी कायनात का सारा इंतज़ाम **एक अल्लाह के हाथ में है।** इसके हुक्म के बग़ैर एक पत्ता भी हिल नहीं सकता और ज़र्रह उड़ नहीं सकता। इसमें ज़रा मुबालग़ा नहीं है। मिट्टी का एक ज़र्रह उड़ नहीं सकता और दरख़्त का एक पत्ता हिल नहीं सकता, गिर नहीं सकता, जब तक कि अल्लाह-तआला का हुक्म न हो। एक तो यह दूसरा यह कि आप हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम आख़री नबी हैं। यह समझे और यक़ीन किये बग़ैर हमें निजात नहीं मिल सकती है। आपके अहकाम पर अमल किए बग़ैर चारा नहीं और कहा गया है किसी को हवा में उड़ते हुए, पानी पर चलते हुए

www.abulhasanalinadwi.org

देखो जब भी इसके मोतक़िद न हो जाओ जब तक कि यह न देख लो कि **शरीअत पर चल रहा है या नहीं ?** यूरोप वाले आज हवा में उड़ रहे हैं, पानी पर चल रहे हैं, यह सब क्या हो रहा है । यह साइंस ने कहां से कहां तक पहुंचा दिया, **क्या इसलिए वह खुदा के मक़बूल बन्दे बन गए ? एक तो यह कि अक़ीदे में मालूम कीजिए क्या तौहीद है क्या शिर्क है और क्या ईमान है क्या कुफ्र है** और फिर इसके बाद अहकाम हैं फ़राइज़ है, पांच वक्त की नमाज़ें हैं । आप कुछ कर लीजिए मगर इन पांचों नमाज़ों का अपने-अपने वक्त पर पढ़ना लाज़मी है । यह जुमअतुल विदा है इसकी नमाज़ आपने पढ़ ली, मगर असर की नमाज़ जो अब आ रही है, किसी तरह इससे कम नहीं है । चाहे वह चार आदमियों के साथ हो और यह होती है पांच सौ आदमियों के साथ ।

मसलन और ईद की नमाज़ इससे बड़ी धूमधाम से होगी, लेकिन चाहे दो आदमी हो, एक इमाम एक मुक़तदी और चाहे इमाम भी न हो अकेले ही पढ़ना पड़े और घर में जानमाज़ बिछा कर पढ़ना पड़े, मिट्टी पर पढ़ना पड़े, जंगल में पढ़ना पड़े और जमअतुल विदा की नमाज़ के जो अभी पढ़ी गई और इससे बढ़कर भी ख़ाना काबा में जो पढ़ी गई है, इससे भी वह कम नहीं है । यानी अल्लाह का हुक्म होने में और **उस पर अमल करने में सब नमाज़ें बराबर हैं** । अब जो नमाज़ आएगी इनका मर्तबा यही होगा । इनके पढ़े बग़ैर फर्ज़ अदा नहीं होगा । आपने जो फ़जर की नमाज़ छोड़ दी चाहे आप अपना घर लूटा दीजिए, आपसे यह नही पूछा जाएगा कि घर क्यों लूटा दिया, आपसे यह पूछा जाएगा कि फ़जर की नमाज़ क्यों नहीं पढ़ी ।

सबसे पहले अक़ीदे का दर्जा इसमें भी सबसे पहले अल्लाह तआला को एक मानना तौहीद फिर रिसालत, हुज़ूर

सल्लल्लाहो अलैहे व सल्लम को अल्लाह का आख़री रसूल मानना कि इसके माने बग़ैर कोई निजात नहीं पा सकता । चाहे कोई हो । जब तक आपको आख़री पैग़म्बर न मान ले आपकी शरीअत को आख़री शरीअत न मान ले और इस पर चलने न लगे । नमाज़ के बाद फिर ज़कात का दर्जा है । मालूम नहीं कितने भाई ऐसे हैं जिन पर ज़कात फ़र्ज़ है । किसी से पूछते ही नहीं कब ज़कात फ़र्ज़ होती है कितनी मिक़दार में ज़कात फर्ज़ होती है । आलिमों से पूछना चाहिए और कितने भाई होंगे, हज उन पर फ़र्ज़ हो चुका है मगर किसी से पूछते नहीं कैसे हज फर्ज़ होता है । इसकी क्या सूरत है । बस एक रस्म व रिवाज पर ज़िन्दगी चल रही है, ईद की बक़रा ईद की नमाज़ बड़ी धूम-धाम से पढ़ लेंगे और किसी से कुछ पूछना मालूम करना नहीं और फिर शादी **यह रस्म रिवाज नहीं है सब शरीअत के काम हैं** । बेटे की शादी करना और बेटी को रुख़सत करना यह **सब शरीअत के हुक्म हैं** और शरीअत की तरफ़ से हिदायत हैं दीन का कामहै मगर इसे वैसा होना चाहिए जैसा अल्लाह और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम ने बताया है और फिर इसके बाद यह फ़िज़ूल ख़र्चियां हैं, सूदी कर्ज़ है, इसराफ़ है नाम व नमूद के लिए शोहरत के लिए बड़ी-बड़ी दावतें करना, हुक्काम की खुशामद करना, इनसे ताल्लुक़ात पैदा करना, **कुछ काम नहीं आएगा । हत्ता युकूनु हुवाहू तबअन लिमा जयतो बेही**

हुवा का लफ्ज़ ऐसा कह दिया जो सब पर सादिक़ आता है । जिसको दिल चाहता है, जिससे दिल खुश होता है, जिससे तारीफ़ होती है, जिससे दिल को इतमीनान होता है, यह सब मेयार इसके ताबे, इसके मुताबिक हो जाएं । इसके हदों के नीचे न आ जाएं, जिसको **मैं लेकर आया हूं** । हुज़ूर सल्लल्लाह अलैहे व सल्लम फ़रमाते हैं, **तबअन लिमा**

www.abulhasanalinadwi.org

जयतो बेही, [illegible] में इश्तग़ाल रखते हैं। सीरते नबवी का मुतालआ रखते हैं, वह समझेंगे कि यहां **लिमा जयतो बेही में** हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम ने कितना ज़ोर दिया है। वरना और भी कोई लफ़्ज़ फ़रमा सकते थे। **लिमा अमरुल्लाहो बिही** अल्लाह ने जिस चीज़ का हुक्म दिया है **मैं जिसको ले कर के आया हूं। अगर** उसके ख़िलाफ़ किया तो गोया **वह मेरी तौहीन करेगा और वह मेरी नाक़दरी करेगा और मेरी तालीम को, मेरे कहने को** ठुकराएगा।

[illegible] आख़री बात यह है कि अपनी आइंदा नस्ल की हिफ़ाज़त कीजिए, [illegible] कीजिए, दीनी तालीम का रिवाज दीजिए, क़रीब मस्जिद है [illegible] अच्छा [illegible] कि मोहल्ला है, मोहल्ले के बच्चे, [illegible] और वह इस क़ाबिल हो जाएं कि क़ुरआन शरीफ़ को पढ़ने लगें, समझने लगें, दीनी किताबों को समझने लगें, अक़ाइद व फ़राइज़ और अहकाम से वाक़िफ़ हो जायेंगे। तब ही मुसलमान रह सकेंगे, यह आपको बता देता हूं इस वक़्त बड़ा ख़तरा पैदा हो गया है [illegible] के ज़हनों में यह बात है, किताबों में आ गई है। तहरीरों में भी आ गई है, अख़बारों में भी आ गई है कि इस मुल्क में बस हिन्दुस्तानी बन कर रहना चाहिए। यह हिन्दू-मुसलमान का फ़र्क़ जो है सही नहीं। बात-बात में यह कहना कि हम मुसलमान हैं, इसके लिए हम क़ुरआन शरीफ़ पढ़ सकें, [illegible] मज़हबी किताबें पढ़ सकें, उर्दू पढ़ सकें। यह सब कुछ नहीं बस हिन्दुस्तानी बन कर रहना चाहिए और सिर्फ़ खाने-पीने की फ़िक्र करनी चाहिए कि हम इसके क़ाबिल हों और हम यहां की ज़िन्दगी में खप जाएं और कोई चीज़ ज़रूरी नहीं।

तो इस वक़्त बहुत ख़तरनाक मन्सूबा चल रहा है, मुसलमानों के

ज़हनों को बदलने के लिए। जिनको अल्लाह ने औलाद दी है या जिनके ज़ेरे असर एक नई नस्ल है, इन्हें बिल्कुल इसकी फ़िक्र न रहे, इनका अक़ीदह क्या होगा, किस शरीअत को मानेंगे, पैग़म्बर को मानेंगे, इसके हुक्मों को मानेंगे, इसकी पैरवी करेंगे, दीनदार बनेंगे, अल्लाह को राज़ी करने और नाराज़ करने का फ़र्क़ पहचानेंगे या नहीं तो आप के लिए फ़र्ज़ है और सारी चीज़ों से ज़्यादा ज़रूरी है कि आप मकतब क़ायम करें, मदरसे क़ायम करें और घर में ऐसा माहौल बनाएं, बीबियों से कह दीजिए, ख़्वातीन मस्तूरात से कह दीजिए कि घर में दीनी बातें कहा करें, बच्चों को नबियों के क़िस्से, सहाबा के वाक़ेआत, सुलहा की हिकायत बयान किया करें। हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम का क़िस्सा सुनाएं कि उन्होंने **तौहीद** का क्या नमूना पेश किया और किस तरह से बता दिया कि जिनको आप लोग पूजते हैं इनके क़ब्ज़े में कुछ नहीं है, जिनकी आप परसतिश करते हैं, वह कुछ नहीं कर सकते। मैंने इनके साथ क्या किया, वह अपने को भी नहीं बचा सके, तो आपको वह क्या बचाएंगे। अमबिया अलैहिमुस्सलाम के क़िस्से, सैय्यदना इब्राहीम अलैहिस्सलाम, सैय्यदना मूसा अलैहिस्सलाम और फिर सरवरे कायनात हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैह व सल्लम के क़िस्से सुनाना और इनसे वाक़िफ़ कराना और मोहब्बत पैदा करना।

और सबसे ज़रूरी बात यह है कि **लायुमिनो अहदोकुम हत्ताअकूना अहब्बा इलेहे मिन अहलेही व वलदेही वन्नासे अजमईन। तुम में से कोई मोमिन (पक्का मुसलमान) नहीं हो सकता जब तक मैं उसके नज़दीक इसके घर वालों से, इसकी औलाद से, ख़ुद इसकी अपनी जान से ज़्यादह अज़ीज़ और महबूब न हूं।** वह सब चीज़ें ज़रूरी हैं, यह चीज़ें आप अपने साथ लेकर

www.abulhasanalinadwi.org

के जाईये। ईद में लोगों को जल्दी होती है, मिलना मिलाना होता है, इसलिए इस वक्त हमने ज़रा इतमिनान से बात कह दी कि न खाना है और न कोई और काम दरपेश है। बस इन चीज़ों को याद रखिए और मैं फिर इस हदीस को दोहराता हूं। तुममें से कोई साहब ईमान वाला नहीं हो सकता, जब तक कि इसकी चाहती चीज़, इसकी पसन्दीदा चीज़ इसके ताबे इसके पैरू न बन जाए, इसके खादिम न बन जाए, इसके चाकर न बन जाए, **जिसको मैं लेकर आया हूं।** जो मैं शरीअत लेकर के आया हूं इसको दिल में जगह दी जाए, इसको सर पर रखा जाए और कुछ रहे या न रहे, तारीफ़ हो या न हो, नफ़ा हो या न हो, नफ़ा हो या नुक़सान, कोई जिस्मानी तकलीफ़ हो जाए, मआशिरे में, सोसायटी में जो बातें होती है उंगलियां उठाई जाएं, कुछ नहीं, इन बातों की कोई परवाह नहीं, **हम तो शरीअत मालूम करेंगे, शरीअत ने क्या हुक्म दिया है, शरीअत ने किसका हुक्म दिया है, शरीअत ने किन बातों से रोका है, इसके क्या हुदूद रखे हैं, कहां तक हम जा सकते है, इसके आगे हम नहीं जा सकते, करेंगे वह जो शरीअत में आया है।** जो बात रस्म व रिवाज में है, आदत बन गई है। घुट्टी में पड़ी हुई बिरादरी के क़ानून में हों। हम कुछ नहीं जानते, न हम बिरादरी को जानते हैं, न उर्फ़ को जानते हैं, न हम सोसायटी को जानते हैं, न तारीफ़ को जानते हैं, **हम बस अल्लाह की शरीअत को जानते और मानते हैं।** शरीअत क्या कहती है बस हम यहां से यह बात लेकर के जाएंगे, जो उम्र भर के लिए काफ़ी है।

आख़िर में आपसे कह दूं कि इस्लाहे मआशिरह ज़रूरी है। निकाह वग़ैराह मस्जिद में हों और जहेज़ का मुतालबा करना कि इतना जहेज़ दोगे तो हम सही सुलूक करेंगे, यह सब जाहेलिय्यत की बातें है और इस्लाम के ख़िलाफ़ बातें हैं। इस्लाम के मुताबिक़ शादी, इस्लाम के

मुताबिक़ निकाह और जो हुक़ूक़ है, फ़राइज़, मीरास, तरका, जाएदाद है और दूसरे उमूर हैं सब पर शरीअत के मुताबिक़ अमल होना चाहिए।

अल्लाह तआला हमको और आपको इससे फाइदा पहुंचाए।

अल्लाहुम्मा व फ़फ़िक़्ना लिमातो हिब्बो व तरदा वजअल आख़िरतिना खैरम्मिन लऊला। आमीन सुमा आमीन

ए अल्लाह तआला। हमें अपनी रज़ा और पसंद के कामों के करने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और हमारी आखिरत को दुनिया के मुक़ाबले में अच्छी बना

ए अल्लाह तआला हमारी दुआ को क़ुबूल फ़रमा।

www.abulhasanalinadwi.org

शाआ करने वाले–
ज़काउल्लाह खां
मदर इसलाहुल मुसलेमीन कमेटी
खजूरी रुंडा
तहसील मल्हारगढ़, ज़िला मंदसौर (म.प्र.)

इस किताब को बार-बार पढ़कर, समझ कर अमल करने की कोशिश कीजिए।

www.abulhasanalinadwi.org